19 दिसम्बर, 2015 को इंदौर, मध्य प्रदेश में आयोजित भारतीय सड़क कांग्रेस के 76वें वार्षिक सत्र के उद्घाटन समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. आज भारतीय सड़क कांग्रेस (Indian Roads Congress) के 76वें अधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर आपका इन्दौर में सहर्ष स्वागत है। मुझे बहुत खुशी है कि इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज जी चौहान भी इस मंच पर उपस्थित हैं। यह सड़कों की महत्ता को अपने–आप ही प्रतिबिम्बित करता है। सड़कें गांव–गांव, शहर–शहर ही नहीं जोड़ती हैं बल्कि ये लोगों, सभ्यताओं और संस्कृतियों को जोड़ती हैं। मुझे बताया गया है कि आईआरसी प्रतिवर्ष वार्षिक अधिवेशन आयोजित करती है जिसे देश के विभिन्न राज्यों द्वारा बारी–बारी से आयोजित किया जाता है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस वर्ष यह आयोजन मध्यप्रदेश को आयोजित करने का अवसर मिला है। यह खुशी की बात है कि मेरे अपने शहर इन्दौर में इसका आयोजन हो रहा है।

2. दिसम्बर 1934 में अपनी स्थापना के बाद से ही यह संस्था इस कार्य में निरंतर लगी है और देश के प्रतिष्ठित हाईवे इंजीनियर्स, महत्वपूर्ण संस्थानों के प्रोफेसर, अन्य तकनीकीविद् इस कार्य में लगातार अपना–अपना योगदान दे रहे हैं। अपनी स्थापना के समय इसके सदस्यों की संख्या 73 थी और आज आईआरसी के सदस्यों की संख्या 13000 से अधिक है जिसमें केन्द्र और राज्य सरकार के इंजीनियर्स शामिल हैं। इसके गठन से पहले किसी भी प्रकार के दिशानिर्देश (Guidelines), विनिर्देश (Instructions), कार्य संहिता और सड़क मानक नहीं थे। विभिन्न राज्यों में प्रायोगिक कार्य एवं परीक्षण कार्य करने के लिए कोई

सुव्यवस्थित प्रणाली नहीं थी। सड़क संबंधी शोधों की जानकारी के प्रचार–प्रसार के लिए कोई संस्था नहीं थी। सड़कों और सेतुओं के निर्माण और उनके रख–रखाव करने संबंधी विभिन्न विषयों पर जानकारी और अनुभव साझा करने के लिए आज आईआरसी एक अत्यावश्यक राष्ट्रीय मंच बन गया है।

3. आईआरसी अन्य कायों के अतिरिक्त, देश में सड़क विकास योजनाओं की संकल्पना और उन्हें मूर्त रूप देने का कार्य करती है। इस संबंध में, इसने चार ऐतिहासिक दस्तावेज तैयार किए हैं, जिन्होंने पिछले 60 वषों के दौरान देश में सड़कों और सड़क परिवहन की बढ़ोतरी और विकास की नींव रखी है, इनमें सड़क विकास योजना (2001–2021): विजन 2021 सबसे नवीनतम है। आईआरसी सड़कों से संबंधित मानकों जैसे सर्वेक्षण, निर्माण, पर्यावरण, अनुरक्षण (Repairing), सुरक्षा, सड़क चिह्न और तकनीक आदि के विषयों पर अत्यधिक उपयोगी प्रकाशनों को भी प्रकाशित करता है।

4. हम सभी जानते हैं कि दुनिया की जितनी भी सभ्यताएं हैं, वे नदी और सड़कों के माध्यम से ही फली–फूली थीं। लगभग हरेक सभ्यताओं में अच्छी सड़कें पाई गई हैं। प्राचीन काल में भी रोम एवं भारत के शासकों ने इसकी महत्ता को समझा था तथा उन्होंने जहां भी अपने साम्राज्य का विस्तार किया तो उन्होंने सड़कों की स्थिति को सुधारा एवं अपने साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों को भी अपनी राजधानियों से जोड़ा। भारत में सम्राट अशोक, शेरशाह सूरी जैसे शासक इस बात के उदाहरण हैं। उन्होंने बहुत पहले ही सड़कों की महत्ता को समझ लिया था। अच्छी सड़कें देश के विकास के लिए आवश्यक हैं।

5. एक कहावत है कि **"यदि किसी राष्ट्र के पास सड़कें हैं, तो आपके पास संपत्ति है।"** यह कथन सच है। सड़कें न केवल परिवहन का माध्यम होती हैं बल्कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मोबिलिटी का भी माध्यम होती हैं। एक सशक्त परिवहन तंत्र विकसित होने से सामाजिक सुरक्षा, व्यापार वृद्धि एवं रोजगार के नए–नए अवसर सृजित होते हैं। चूंकि इससे पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि सहित अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों को Boost मिलता है तथा इन व्यापारिक गतिविधियों से गरीबी उन्मूलन एवं आय बढ़ाने में मदद मिलती है। आज गांव, कस्बा, शहर और महानगर सभी आज सड़कों के माध्यम से जुड़े हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कें आज सामाजिक परिवर्तन का माध्यम हो गई हैं। इनके माध्यम से कृषि उत्पाद बहुत आसानी से शहरों तक पहुंच जाते हैं तथा किसानों को उन उत्पादों का सही मूल्य मिल पाता है।

6. आज हम पूरे विश्व को एक ग्लोबल विलेज मानते हैं। प्राचीन काल में भी व्यापार परम्परा में इस बात को इंगित किया गया था। एक इतिहासकार के कथन के अनुसार, शहरी व्यापारिक नेटवर्क तैयार करने में मेसोपोटामिया, मिस्र, सिंधु घाटी सभ्यता में भी सड़कों का विशेष महत्व था। सड़क के अलावा जल मार्ग से भी मसालों, वस्त्रों इत्यादि का व्यापार भारत से मध्य पूर्व एशिया होते हुए यूरोप तक हुआ करता था। ये अंतर्राष्ट्रीय मार्ग व्यापार के साथ–साथ धर्म, सभ्यता, संस्कृति और रहन–सहन के आपसी समन्वयन के सूत्रधार के रूप में काम करते थे। सिल्क रूट से भारत से ढाका का मलमल और भागलपुर का रेशम चीन और यूरोप जाया करता था। इस प्रकार पहली बार पूर्व का पश्चिम से मिलन हुआ तथा दोनों संस्कृतियों में आपसी exchange संभव हुआ और दोनों संस्कृतियों ने एक–दूसरे की अच्छाइयों को आत्मसात् किया। बौद्ध धर्म के प्रसार का मार्ग भी प्रशस्त हुआ।

कुषाण राजा कनिष्क द्वारा इस मार्ग का विशेष ध्यान रखा गया तथा सिल्क रोड आने वाले समय में मुख्य मार्ग बनकर उभरा। इसी प्रकार शेरशाह सूरी ने पेशावर से चटगांव तक ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण कराया जो बाद में जाकर भारत की लाइफलाइन बन गया। इस सड़क के किनारे पर वृक्ष, सरायखाना एवं पानी पीने के लिए कुएं खुदवाए गए।

7. सड़कें न केवल आर्थिक बल्कि सामरिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। किसी भी देश की संप्रभुता सुरक्षित रखने के लिए उसकी सैन्य शक्ति का सशक्त होना अत्यावश्यक है और सड़कों का निर्माण सामरिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है ताकि युद्ध के समय में सैन्य, रसद एवं मदद तीव्र गति से उन्हें पहुंचाई जा सके।

8. आज सड़कों की लम्बाई की दृष्टि से हमारा देश पूरे संसार में दूसरे नम्बर पर है। परंतु, केवल लम्बाई ही महत्वपूर्ण नहीं है। उसका टिकाऊ एवं सुरक्षित होना भी महत्वपूर्ण है। गुणवत्ता की दृष्टि से इसमें सुधार की गुंजाइश है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर इंडियन रोड्स कांग्रेस को अब न केवल टिकाऊ बल्कि सुरक्षित एवं पयार्वरण की दृष्टि से अनुकूल सड़क एवं पुल बनाए जाने की दिशा में अधिक काम करना जरूरी है।

9. मित्रो, देश में हाइवे इंजीनियरों की उच्चतम संस्था के रूप में भारतीय सड़क कांग्रेस ने हमारे देश में Roads and Highway Infrastructure के लिए विशेषज्ञता उपलब्ध कराई है। मैं इस बात की सराहना करती हूं कि आईआरसी इन कार्यों को करने के साथ–साथ कम प्रदूषण करने वाली तकनीकों को बढ़ावा देने हेतु नई सामग्री का उपयोग भी करता है। आईआरसी यह भी मानता है कि

राजमार्ग निर्माण का विपरीत प्रभाव और पर्यावरण पर काम करना एक बाह्य परिस्थिति है, जिसका सामाजिक प्रभाव होता है और इसका समावेशन किए जाने की आवश्यकता है। **मेरा यह भी सुझाव है कि सड़क निर्माण के तकनीकी पहलुओं की परिकल्पना करते समय आप सड़क पर्यावरण पर भी कार्य करें जिससे न केवल वायु एवं ध्वनि प्रदूषण पर रोक लगेगी बल्कि यात्रियों को भी सहुलियत मिलेगी।**

8. अमेरिका की आर्थिक प्रगति के बारे में एक कहावत है कि ''अमेरिका की सड़कें अच्छी इसलिए नहीं है कि अमेरिका समृद्ध है, बल्कि अमेरिका समृद्ध है क्योंकि वहां की सड़कें अच्छी हैं। सड़कें आज और कल के लिए नहीं बनती हैं। ये भविष्य के लिए बनाई जाती हैं। इसलिए आपको सड़कों का निर्माण सोच–समझकर करना होगा। सड़कों के साथ–साथ देश की अर्थव्यवस्था जुड़ी होती है। ये परिवर्तन एवं सभ्यता के उत्थान का माध्यम होती हैं और हमें इस दृष्टिकोण से सड़कों का निर्माण करना चाहिए। किसी देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और व्यापारिक सशक्तिकरण में उनका विशेष योगदान है। भारत के परिप्रेक्ष्य में, कश्मीर से कन्याकुमारी एवं कच्छ से कोहिमा तक पूरे देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में इनका विशिष्ट योगदान है।

9. महान युगद्रष्टा राजनीतिज्ञ एवं पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी का सपना था कि भारत के एक–एक गांव सड़क के माध्यम से आपस में जुड़ें ताकि विकास की किरण हर गांव तक पहुंचे। उन्होंने इसके लिए ''प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना'' की शुरूआत की थी। इस योजना पर पिछले एक दशक में प्रभावी काम हुआ है। उन्होंने ''ईस्ट–वेस्ट कॉरीडोर'' एवं ''गोल्डन क्वाड्रिलैटरल रोड्स'' योजना नामक अत्यंत महत्वाकांक्षी योजना की नींव भी रखी थी, जिस पर निरंतर

काम चल रहा है। आज उनके इस सपने को साकार करने का जिम्मा श्री नितिन गडकरी जी के हाथों में है।

10. मध्यप्रदेश में कुल 68106 किलोमीटर लम्बाई की सड़कें हैं जिनमें 4676 किलोमीटर की लम्बाई के राष्ट्रीय राजमार्ग हैं। मैं एक महत्वपूर्ण आंकड़े की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहती हूं कि मध्यप्रदेश में सड़कों का घनत्व प्रति 100 वर्ग किलोमीटर 22.14 किलोमीटर है जबकि राष्ट्रीय घनत्व 37 किलोमीटर है। मध्यप्रदेश देश का हृदय प्रदेश है और देश की आर्थिक राजधानी मुंबई से सटे होने के कारण यहां और अधिक राजमार्ग का निर्माण किए जाने की आवश्यकता है।

11. विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क होने के कारण तथा हमारे देश में हो रही जनसंख्या की वृद्धि के कारण परिवहन व्यवस्था में वृद्धि हुई है। इस वृद्धि का एक कुप्रभाव यह पड़ा है कि सड़क दुर्घटनाओं में तीव्र गति से बढ़ोतरी हुई है। यह कटू सत्य है कि भारत में प्रतिवर्ष लगभग 4.60 लाख लोग दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं। उनमें से लगभग 2 लाख लोग इसमें अपनी जान गंवा देते हैं। इस तथ्य से अधिक पीड़ा होती है कि प्रतिदिन इन दुर्घटनाओं में 14 वर्ष से कम के 20 किशोरों की मृत्यु हो जाती है जबकि असमय मरने वालों में दो पहिया वाहनचालकों की संख्या कुल मृत्यु का लगभग 25 प्रतिशत होती है। तमिलनाडु राज्य में सबसे अधिक वाहन दुर्घटनाओं मे मृत्यु होती है। मेडिकल इमरजेंसी में भी सड़कों का महत्व बढ़ जाता है। यदि सशक्त सड़क नेटवर्क मौजूद हो, तो दूरदराज में रह रहे रोगियों की जान बचाना संभव हो जाता है।

12. मेरा मानना है कि सड़क दुर्घटनाओं को रोकने की दिशा में युद्धस्तर पर अविलम्ब कार्य किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए चार 'ई' अत्यन्त महत्वपूर्ण है। Education, Enforcement, Engineering और Emergency Care.

सुदृढ़ रोड नेटवर्क के सफलतापूर्वक संचालन के लिए यह जरूरी है। यदि हम सड़क मार्ग का इस्तेमाल करने वाले लोगों को परिवहन नियमों से अवगत कराएं, निर्धारित कानूनों का पालन किया जाए, सही तकनीक से सड़कें बनाई जाएं एवं आपातकाल में मेडिकल हेल्प उपलब्ध कराई जाए तो बड़ी संख्या में होने वाली इस जनहानि को रोका जा सकेगा। इन दुर्घटनाओं से न केवल जनहानि होती है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था पर प्रहार होता है और देश के मानव संसाधन की अपूरणीय क्षति होती है।

13. प्राप्त आंकड़ों के अनुसार आज देश में प्रति 1000 व्यक्तियों पर मात्र 3 किलोमीटर सड़क उपलब्ध है जबकि वैश्विक औसत 7 किलोमीटर है। अतः, अभी सड़क निर्माण में और गति लाए जाने की आवश्यकता है। हालांकि यह बात भी सच है कि जब हम सड़क निर्माण की बात करते हैं तो ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण एवं कृषि योग्य भूमि की हानि जैसी बातों का भी संवेदनशीलता से ध्यान रखना होगा। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण को कम करने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। हाल ही में पेरिस में हुए जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में यह सहमति बनी है कि हमें विश्व के जलवायु में बढ़ रहे तापमान को कम करने के लिए कार्बन उत्सर्जन के मानकों को अपनाना है। भारत इसमें अग्रणी राष्ट्र सबित हो सकता है।

14. सड़क एवं पुल निर्माण में भी इस बात को समझने की आवश्यकता है। मुझे उम्मीद है कि इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में हाईवे एवं ब्रिज निर्माण की तकनीक और बेहतर बनाने की दिशा में सभी तकनीकीविदों का उत्तम सुझाव प्राप्त होगा। इन सुझावों से आगामी सड़क निर्माण की तकनीक/सड़क अवसंरचना में क्रांतिकारी परिवर्तन आ सकते हैं। आस्ट्रेलिया में तेल रिफाइनरी के अपशिष्टों एवं इस्पात

विनिर्माण के अपशिष्टों से सड़क बनाने की दिशा में बहुत काम हुआ है जो कि सस्ता और टिकाऊ दोनों होता है। इस तरह का तकनीक भारत में भी अपनाए जाने की आवश्यकता है।

15. इंडियन रोड्स कांग्रेस जिस थ्योरी पर काम कर रही है वह है **Minimise Accident, Maximize Medical Help.** ऐसा देखा गया है कि कई बार हाईवे पर डिजाईन और गलत कर्व के कारण ही दुर्घटनाएं हो जाती हैं जिन्हें निश्चित रूप से रोका जा सकता है। सड़कें ऐसी बनें जिसमें कोई तीखा/अंधा मोड़ न हो ताकि चालक की मामूली गलती होने पर भी गंभीर दुर्घटनाएं न हो सके। सड़क सुरक्षा की दृष्टि से यह सोच अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे विकसित एवं परिवर्धित रूप देते हुए उसके मुताबिक नई पद्धति तैयार करने की आवश्यकता है।

16. इस अवसर पर आज पूरे देश से हाईवे एवं ब्रिज निर्माण क्षेत्र के इंजीनियर्स, शोधकर्ता, सलाहकार एवं वैज्ञानिक एकत्रित हुये हैं। आप सभी सुधीजनों पर देश की सड़कों का भविष्य निर्भर है। इस मौजूदा सत्र के दौरान अगले कुछ दिनों में आईआरसी सड़कों और राजमार्गों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार–विमर्श करेगा। ऐसे में मैं हमारी सड़कों और राजमार्गों की सुरक्षा का समाधान करने की आवश्यकता को उजागर करना चाहती हूं। सरकार ने राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा नीति और अन्य कदम भी उठाए हैं। मुझे खुशी है कि सड़क सुरक्षा की आवश्यकता पर बल देने के उद्देश्य से सड़क सुरक्षा अभियान के एक भाग के रूप में प्रति वर्ष जनवरी माह में "सड़क सुरक्षा सप्ताह " का आयोजन किया जाता है। इससे सभी संबंधित लोगों को यह अवसर मिलता है कि वे अपने प्रयासों से सड़कों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में योगदान दें। मुझे आशा है कि आईआरसी के वर्तमान सत्रों में होने वाली चर्चाओं में भी इस अत्यावश्यक मुद्दे को कई प्रकार से उठाया जाएगा ।

17. इन्हीं शब्दों के साथ, मैं कामना करती हूं कि भारतीय सड़क कांग्रेस के 76वें वार्षिक सत्र में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों के लिए ये चर्चाएं उत्साहपूर्ण और सार्थक सिद्ध होंगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विभिन्न सत्रों के दौरान विचारों और सूचनाओं के आदान–प्रदान से सड़क और राजमार्ग क्षेत्र से जुड़े गंभीर मुद्दों के समाधान में सहायता मिलेगी और आने वाले वर्षों में देश में सड़क अवसंरचना **(Roads Infrastructure)** को और अधिक सुरक्षित, आधुनिक और विकसित करने का मार्ग प्रशस्त होगा ।

धन्यवाद।